रहा है। बड़े-बड़े उद्योगों के लग जाने के कारण अधिकांश श्रमिक अब बेकार होते जा रहे हैं। इस बेकारी की स्थिति के कारण अब लोग उन कृत्यों को कर रहे हैं जिसे असामाजिक कहा जाता है। इस स्थिति के कारण भी सामाजिक परिवर्तन निश्चित सा हो जाता है।

(3) पश्चिमीकरण (Westernisation)—पश्चिमीकरण से तात्पर्य पश्चिमी समाजों का किसी गैर-पश्चिमी समाज पर पड़ने वाले प्रभाव से है। भारतीय समाज के ऊपर पश्चिमी समाजो का व्यापक प्रभाव पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप यहाँ की मूलभूत सामाजिक संस्थाएँ प्रभावित हुई हैं। अंग्रेज 1600 ई० से भारतीय समाज के सम्पर्क में आये और तभी से उन्होंने यहाँ के निवासियों को अपने चाल-ढाल, पोशाक, बोली और रहन-सहन से प्रभावित करना शुरू किया। इसका सबसे अधिक प्रभाव यहाँ के उच्च तथा मध्यम वर्ग के लोगों पर पड़ा और उनका रहन-सहन, पोशाक तथा बोल-चाल भी अब अंग्रेजों की भाँति होने लगा। इस स्थिति के कारण परम्परागत सामाजिक सम्बन्धों मे परिवर्तन प्रारम्भ हुआ और एक नया सामाजिक ढाँचा निर्मित हुआ। पश्चिमीकरण ने एक ओर जहाँ जाति-पाँति को गलत सिद्ध करने का प्रयास किया वही पर उसने जातिगत दूरी तथा भेदभाव को बढ़ाने में भी मदद दी। यह पश्चिमीकरण का प्रभाव रहा है कि पढ़े-लिखे लोग भी जातिवाद तथा साम्प्रदायिक भेदभाव से अपने को अलग नहीं रख सके। पश्चिमीकरण ने मानवतावाद, समानता तथा धर्मनिरपेक्षता की भावना को बढ़ाने मे मदद दी। प्रेस, आवागमन के साधन तथा अन्य ऐसी ही चीजो का आविष्कार कर उसने सामाजिक दूरी को कम करने का प्रयत्न किया जिसके परिणामस्वरूप दूरस्थ स्थानों के लोग अपने विचारों का आदान-प्रदान करके एक नयी सामाजिक व्यवस्था के लिए कृतसंकल्प हुए। नियतिवाद से आशावाद की ओर, अन्धविश्वास से तार्किक व्यवहार की ओर, अध्यात्मवाद के साथ-साथ भौतिकवाद की ओर भारतीय लोगों को प्रेरित करने का श्रेय पश्चिमीकरण को है। इस प्रकार की स्थिति के कारण भारतीय सामाजिक संगठन मूलभूत रूप से परिवर्तित हो रहा है। पश्चिमीकरण के प्रभाव के कारण ही पवित्रता तथा अपवित्रता की अब धारणा बदल रही है। जिसे आज से कुछ दिन पहले तक पवित्र माना जाता था वही आज अपवित्र माना जाता है। इस पवित्रता तथा अपवित्रता की अवधारणा में परिवर्तन के कारण आज लोगो के दृष्टिकोणों मे परिवर्तन हो रहा है और यह परिवर्तन सामाजिक मूल्य में परिवर्तन को जन्म दे रहा है। मूल्यो में परिवर्तन भी भारतीय सामाजिक परिवर्तन का कारण है। पश्चिमीकरण का प्रभाव निम्न जातियों के ऊपर भी पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप वे अपनी स्थिति में सुधार के लिए जागरूक हुए। यही कारण है कि आज निम्न जाति के लोग अपने अर्जित गुणो में वृद्धि करके अपने परम्परागत रहन-सहन के ढंग को परिवर्तित कर रहे हैं। यह स्थिति भी सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। पश्चिमीकरण ने व्यक्तिवादिता का भी विकास किया है जिसके परिणामस्वरूप आज लोगों में साथ-साथ रहने तथा परिवार के अन्य व्यक्ति के लिए कुछ करने की भावना समाप्त हो रही है। संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार की ओर झुकने की प्रवृत्ति भी पश्चिमीकरण का ही परिणाम है।

(4) धर्मनिरपेक्षीकरण (Secularisation)—भारतीय समाज को धर्म-प्रधान देश कहा जाता रहा है। यहाँ के लोग परम्परागत इसलिए कहे जाते थे क्योंकि उनका प्रत्येक व्यवहार धर्म पर केन्द्रित होता था। धर्म का जो रूप आज यहाँ है वही

हजार वर्ष पहले भी था और चूंकि व्यवहार धर्म पर आश्रित था यही कारण है कि उसमें परिवर्तन नही हो पाता था। विवेकानन्द से अमरीका में यह पूछे जाने पर कि भारतीय तथा अमरीकी जनता में मूलभूत अन्तर क्या है, उन्होंने उत्तर दिया कि अमरीकी जनता जहाँ सरकार और उसके स्वरूप के बारे में अधिक जागरूक है वहीं पर भारतीय जनता धर्म और उसके प्रभाव के बारे में अधिक जागरूक रहती है। लेकिन अब यह विशेषता लुप्त हो रही है क्योंकि यहाँ धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया कार्यरत है जिसके अन्तर्गत धर्म विशेष को श्रेष्ठ या निम्न कहना उचित नहीं और न ही धर्म के आधार पर व्यक्ति का प्रत्येक व्यवहार उचित कहा जा सकता है। ऐसी स्थिति मे लोगों का व्यवहार अब औपचारिक नियन्त्रण के साधनों जैसे कानून, राज्य आदि से अधिक निर्देशित होने लगा है। औपचारिक नियन्त्रण के साधनों की यह विशेषता होती है कि वे स्वयं समय-समय पर संशोधित या परिवर्तित होते रहते हैं। ऐसी स्थिति में उनके द्वारा निर्देशित व्यवहार में संशोधन या परिवर्तन स्वाभाविक है। स्वतन्त्र भारत ने अपने नीति निर्देशक तत्त्वों में धर्मनिरपेक्षीकरण को प्रमुख स्थान दिया है जिसके परिणामस्वरूप प्रभावकारी धर्मों का महत्त्व घट रहा है। ऐसी स्थिति के कारण भी भारत में सामाजिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। धर्मनिरपेक्षीकरण के अब बुद्धिवाद या तार्किकता (rationalism) को बढ़ावा मिल रहा है जबकि पहले भारत में धर्म के नाम पर अन्धानुकरण की भावना अधिक थी। यह स्थिति भी सामाजिक परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है। धर्म जिसे अपवित्र या अनुचित कहता रहा है उसे तार्किक दृष्टिकोण पर उचित सिद्ध किया जा रहा है जैसे ब्राह्मण वर्ग का व्यक्ति मांस या अण्डे का सेवन नहीं कर सकता था क्योंकि हिन्दू धर्म उसे अपवित्र मानता था और इसी कारण जो व्यक्ति ऐसा करता था उसे असामाजिक, अनुचित या अवांछनीय कहा जाता था। आज स्थिति कुछ दूसरी है अब मांस तथा अण्डे को स्वास्थ्य के लिए उचित बतलाते हुए उसे ब्राह्मण के रसोईघर मे रखने की सलाह दी जाती है। अब जिस रसोईघर में अण्डा नहीं बरता जाता उसे लोग उचित नही बताते। इस प्रकार के दृष्टिकोण मे अन्तर का कारण धर्मनिरपेक्षीकरण है जिसके फलस्वरूप सामाजिक सम्बन्ध बदल रहे हैं। विभिन्न समुदाय, जाति तथा धर्म के अनुयायियों के बीच खान-पान पर वह प्रतिबन्ध नही रहा जो पहले था। धर्मनिरपेक्षीकरण धर्म को अब एक तार्किक दृष्टिकोण दे रहा है जिसके कारण विभिन्न धर्मों तथा सम्प्रदायों के लोग अब साथ-साथ समान लक्ष्य की पूर्ति मे देखे जा सकते हैं। यह स्थिति भी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को बढ़ावा दे रही है।

(5) जनतन्त्रीकरण (Democratisation)—भारतवर्ष में तीव्र सामाजिक परिवर्तन का एक कारण जनतन्त्रीकरण का विकास है। यहाँ प्रजातान्त्रिक सरकार की स्थापना के बाद समाज को बदलने का कार्यक्रम भी इसी माध्यम से पूरा किया जा रहा है। प्रजातान्त्रिक नियोजन जिसे हम पचवर्षीय नियोजन भी कहते हैं के द्वारा भारतीय सामाजिक संगठन मे मूलभूत परिवर्तन हुआ है। शक्ति का विकेन्द्रीकरण भी इसी प्रक्रिया के कारण सम्भव हो सका है। जनतन्त्रीकरण अच्छे व्यक्तित्व के विकास के लिए कृतसंकल्प है, यही कारण है कि आज धर्म, जाति, धन, लिंग आदि भेदो के आधार पर सामाजिक व्यवहार मे कोई अन्तर नही है। सभी को समान बनाने मे जनतन्त्रीकरण का योगदान उल्लेखनीय है। समाज के पिछड़े लोगों—विशेषकर अस्पृश्यों की समस्या का समाधान बहुत अशों में इस प्रक्रिया द्वारा सम्भव

हो सका है। प्रत्येक व्यक्ति को विचार अभिव्यक्ति, विवाह, शिक्षा तथा किसी उचित कार्य करने की स्वतन्त्रता है। ऐसी स्थिति के कारण अब पिछड़े वर्गों की हालत में सुधार के साथ-साथ स्त्रियों की दशा में भी सुधार विशेष उल्लेखनीय हो रहा है। स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन के कारण अब यहाँ की मूलभूत सामाजिक सस्था (परिवार) परिवर्तित हो रहा है जिसकी स्पष्ट झलक सामाजिक परिवर्तन है। स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व जो जनतन्त्रीकरण का आधार है। उससे भारतीय सामाजिक संस्थाएँ अधिक अंशों में प्रभावित हो रही हैं। सरकार का रूप वयस्क मताधिकार पर आश्रित है अतः चुनाव के समय जनता को सरकार का रूप बदलने का पूरा अधिकार प्राप्त है, सरकार के बदलने से राष्ट्रीय नीति बदलती है जो सामाजिक सम्बन्धों को भी प्रभावित करती है। शक्ति के विकेन्द्रीकरण का जो कार्य जनतन्त्रीकरण के माध्यम से शुरू हुआ है उसके द्वारा ग्राम स्तर की समस्याओं के समाधान के लिए केन्द्र सरकार द्वारा कार्यक्रम बन रहे हैं। अब ग्राम पंचायतों को भी अधिकार प्राप्त है ताकि वे लोगों को सामाजिक न्याय कम खर्च तथा कम समय में दे दें। शक्ति के विकेन्द्रीकरण के बाद अब जिन लोगों के पास सत्ता या शक्ति जा रही है वे उसका दुरुपयोग भी कर रहे हैं। मापावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद और सम्प्रदायवाद जैसी समस्याएँ भी राजनीतिकरण के कारण उत्पन्न हो रही हैं जिसके परिणामस्वरूप लोगों का दृष्टिकोण संकुचित हो रहा है। यह स्थिति भी समाज को एक नये प्रकार से परिवर्तित कर रही है। जनतन्त्रीकरण ने राजनीतिकरण को जन्म दिया है जिसके कारण अब अधिकाधिक लोग राजनीति में उलझते जा रहे हैं। अब तो शैक्षणिक संस्थाओ को भी राजनीति का अखाड़ा बनाया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के स्तर में गिरावट और अन्य विभिन्न छात्र-समस्याओं का जन्म हो रहा है। यह स्थिति भी सामाजिक परिवर्तन का कारण है।

(6) नगरीकरण (Urbanisation)—भारत में सामाजिक परिवर्तन का एक अन्य कारण ग्रामीण समुदाय पर नगरीकरण का प्रभाव है। यातायात तथा आवागमन की सुविधा के कारण अब गाँव का व्यक्ति रोज छोटे-मोटे कार्यों के लिए भी नगर में आता है और वह यहाँ की चमक-दमक से इतना प्रभावित हो जाता है कि अपने ग्रामीण जीवन में भी उन्ही के अनुरूप व्यवहार शुरू कर देता है। वह जब कभी वैसा नही कर पाता तो अपने परम्परागत गाँव तथा परिवार को छोड़कर नगर मे ही स्थायी रूप से रहने लगता है। कुछ समय बाद जब वह फिर गाँव में जाकर देखता है तो उसे अनुभव होता है कि यह जगह उसके अनुरूप अब नही रही क्योंकि सभी लोग उसे अब भी वही स्थान देते हैं जो उसे पहले मिला करता था अतः इस बार वह अपनी पत्नी, बच्चो तथा अन्य प्रत्यक्ष आश्रितो को लेकर गाँव छोड़कर नगर को चला जाता है। यह आवश्यक नही कि उसके आश्रित भी नगर में उचित समायोजन कर ही लेंगे। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि अधिकांश ऐसे लोग नयी परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित नही कर पाते जिसके कारण सामाजिक सम्बन्ध परिवर्तित होता है। यद्यपि औद्योगीकरण का नगरीकरण पर प्रभाव पड़ता है फिर भी इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं कि बिना औद्योगीकरण के नगरीकरण सम्भव नहीं। अधिकाश भारतीय नगर ऐसे रहे हैं जहाँ उन्नीसवीं सदी के पहले केवल लघु उद्योग-धन्धे ही विकसित थे। शक्ति से स्वचालित उद्योग अब भी अधिकांश भारतीय नगरों में प्रचुर मात्रा में नहीं हैं। नगरों में लोगों के बीच द्वैतीयक सम्बन्ध 'व्यक्तिवाद' को बढ़ावा दे रहे हैं जिसके

dkj.k ijijkxr lkekftd lLFkk,] tl ifjokj rFkk fookg] ifjofrr gk jg g tk lkekftd ifjoru dk ey dkj.k g A